गांवों में आईसीएआर स्थापना दिवस मनाया

■ वैज्ञानिकों का किसानों से सीधा संवाद कार्यक्रम

बीकानेर. भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के 86 वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य पर बीकानेर स्थित आईसीएआर के संस्थानों (5) के वैज्ञानिकों ने गांव जालवाली की पंचायत समिति भवन में 'कृषक-वैज्ञानिक संवाद के तहत ''शुष्क क्षेत्र में कृषि एवं पशु पालन प्रबन्धन'' विषय पर करीब 300 किसानों, पंचायत समिति के प्रतिनिधियों के साथ गहन चर्चा की।

चर्चा के दौरान वैज्ञानिकों ने सूखे-अकाल की स्थिति से निपटने के लिए उचित प्रबन्धन तथा समय पूर्व सजगता बरतने पर जोर दिया। किसानों ने जहां बागवानी संस्थान की ओर से विकसित मतीरे की प्रजाति-वैराइटी की प्रशंसा की वहीं पशुओं तथा फसलों के उचित भाव की भी बात उठाई। आईसीएआर दिवस की पूर्व दिवस पर कल 15 अच्छी नस्ल के मेंढें, कानासर के भेड़ पालकों को वितरित किए गए। इस अवसर पर वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु प्रदर्शनी का आयोजन रखा गया तथा किसानों को निःशुल्क पशु आहार बट्टिकाएं, बीज आदि वितरित किए गए। वहीं पशु स्वास्थ्य शिविर के अन्तर्गत गांव जालवाली, कानासर, कोटड़ा आदि आस-पास क्षेत्र के गांवों पशुओं का उपचार किया गया। जालवाली पंचायत समिति में आयोजित इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान, केन्द्र बीकानेर के निदेशक डॉ.एन.वी.पाटिल ने कहा कि आज के समय में चरागाह/कृषि भूमि तेजी से घट रही है परंतु फिर भी आईसीएआर संस्थानों की अनुसंधान उपलब्धियों से प्रत्येक क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ी है। अब परिषद 'फार्मर फर्स्ट' के तहत अपना तकनीकी ज्ञान किसानों तक सीधे स्वरूप में पहुंचाने हेतु उत्सुक हैं। केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, बीकानेर के अध्यक्ष डॉ.ए.के.पटेल ने कहा कि करीब 100 संस्थाओं और 50 विश्वविद्यालय से युक्त आईसीएआर कृषि क्षेत्र में देश की सबसे बड़ी संस्था है। राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर के प्रधान डॉ.आर.ए.लेघा ने अश्वों की नस्लों- घोड़ा, गधा, खच्चर की विशेषताओं तथा देसी गधों की उपयोगिता के बारे में जानकारी दीं। काजरी, बीकानेर के डॉ.एम.एल.सोनी, उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र के प्रधान वैज्ञानिक डॉ.राघवेन्द्र सिंह ने विचार रखे।